

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, धर्मशास्त्र, सत्र 6, पिता परमेश्वर है

© 2024 रॉबर्ट ए. पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन और धर्मशास्त्र उचित या ईश्वर पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 6 है, पिता ईश्वर है।

हम धर्मशास्त्र उचित, ईश्वर के सिद्धांत पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं।

हमारे पास सात कथन हैं, क्योंकि हम शास्त्रों से त्रिएकत्व के सिद्धांत का निर्माण कर रहे हैं। त्रिएकत्व के ऐतिहासिक धर्मशास्त्र का सर्वेक्षण करने के बाद, हम पाते हैं कि एक ईश्वर है। हमने इसे व्यवस्थाविवरण 6:4, और 5, याकूब 2:19, और 1 तीमुथियुस 2:5, और 6 से लिया है। एक ईश्वर है, नंबर एक।

दूसरा, पिता परमेश्वर है। तीसरा और चौथा, पवित्र आत्मा परमेश्वर है। पाँचवाँ, पिता, पुत्र और आत्मा अविभाज्य हैं, लेकिन अलग-अलग हैं।

हम व्यक्तियों को अलग नहीं करते, लेकिन हम उन्हें अलग-अलग पहचानते हैं। हम उन्हें भ्रमित नहीं करते। अविभाज्य, वे एक ईश्वर हैं, लेकिन अलग-अलग हैं।

अर्थव्यवस्था में, इतिहास में, मुक्ति के इतिहास में, वे अलग-अलग भूमिकाएँ निभाते हैं। छठा, पिता, पुत्र और आत्मा एक दूसरे में निवास करते हैं। एक आश्चर्यजनक रहस्यमय सिद्धांत विशेष रूप से जॉन के सुसमाचार में प्रकट हुआ है।

नया नियम त्रिएकत्व के बारे में पूरी तरह से सिद्धांत नहीं सिखाता, लेकिन एकरूपता, परिकोरेसिस, व्यक्तियों के खतने की धारणा त्रिएकत्व को दर्शाती है। यह उल्लेखनीय है। और फिर सात, पिता, पुत्र और आत्मा एकता और समानता में मौजूद हैं।

एक ईश्वर है, तीन ईश्वर नहीं, और तीनों व्यक्ति अपने आप में समान हैं। बेशक, अवतार में पुत्र अधीनस्थ हो जाता है। पिता ईश्वर है।

परमेश्वर पिता का ईश्वरत्व शास्त्र में इतना स्पष्ट है कि बहुत से लोग इसे मान लेते हैं। वास्तव में, मैं कहूँगा कि इसे उपेक्षित किया जाता है। आपको परमेश्वर के ईश्वरत्व को दिखाने की ज़रूरत नहीं है।

खैर, मुझे लगता है कि आपको सब कुछ दिखाना होगा। और परमेश्वर पिता की दिव्यता को कई कोणों से दिखाया गया है। इनमें दिव्य उपाधियाँ, मसीह से उसका संबंध, दिव्य गुण या विशेषताएँ, उसकी पूजा प्राप्त करना और दिव्य कार्य शामिल हैं।

इनमें से ज़्यादातर दार्शनिक कथन हैं, जिनका नाम मुझे अभी याद नहीं है। इनमें से, जिन लोगों को दैवीय उपाधियाँ दी गई हैं, वे वास्तव में ईश्वर हैं, एक न्याय-वाक्य। वे न्याय-वाक्य हैं।

पवित्र शास्त्र में पिता को सचमुच दिव्य उपाधियाँ दी गई हैं। इसलिए, पिता परमेश्वर है। पवित्र शास्त्र में पिता को जिस तरह से संदर्भित किया गया है, उससे पता चलता है कि वह परमेश्वर है।

वह है, मत्ती 11:25, यीशु के होठों से। यीशु खुश नहीं है। उसने अपने अधिकांश चमत्कार गलील सागर के आस-पास के गलीली शहरों में किए, लेकिन वह खुश नहीं था क्योंकि वे विश्वास नहीं करते थे।

वह उन्हें फटकारता है और फिर ईश्वरीय संप्रभुता का एक अद्भुत बयान देता है। सबसे पहले, वह उन्हें मानवीय जिम्मेदारी, जवाबदेही और असफलता के बारे में बताता है। हाय तुम पर! वह उन्हें आशीर्वाद देता है।

यदि आप में किए गए चमत्कार सदोम और अमोरा में किए गए होते, तो वे पश्चात्ताप करते। सदोम और अमोरा बुराई के प्रतीक थे। आपका न्याय उनसे भी बुरा होने वाला है क्योंकि अधिक प्रकाश अधिक जिम्मेदारी लाता है।

अधिक प्रकाश को अस्वीकार करने से अधिक न्याय होता है। 11 मत्ती 25. उस समय, यह कहने के बाद, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ, न्याय के दिन सदोम की भूमि के लिए यह तुम्हारे लिए अधिक सहनीय होगा।

दिव्य, मेरा मतलब है, मानवीय जिम्मेदारी और ईश्वर के प्रति जवाबदेही बड़े अक्षरों और बोल्डफेस और इटैलिकाइज़ में लिखी गई है, जो कि अंग्रेजी में जोर दिखाने का तरीका है, बाद वाला। वैसे भी, उस समय, यीशु ने घोषणा की, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु। यह, मेरे दोस्तों, एक दिव्य उपाधि है।

तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपाकर बालकों पर प्रगट किया है। हाँ, हे पिता, तेरी यही इच्छा थी। मेरे पिता ने सब कुछ मुझे सौंप दिया है, और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता को, और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र को।

और उसने यह बात किसी पर भी थोप दी थी, जिसे बेटा उसे प्रकट करना चाहता है। ईश्वरीय संप्रभुता। बेटे की संप्रभुता।

वह अविश्वास के लिए गैलीलियन शहरों की निंदा करता है। फिर वह कहता है, पिता को कोई नहीं जानता सिवाय उनके जिन्हें बेटा प्रकट करना चाहता है। मानवीय जिम्मेदारी, ईश्वरीय संप्रभुता।

अगले ही शब्द, मानवीय जिम्मेदारी। जो लोग मेहनत करते हैं और बोझ से दबे हुए हैं, वे सब मेरे पास आएँ और मैं तुम्हें आराम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठाओ और मुझसे सीखो क्योंकि मैं नम्र और दिल से दीन हूँ और तुम अपनी आत्माओं के लिए आराम पाओगे। मेरा जूआ आसान है

और मेरा बोझ हल्का है।

ईश्वरीय संप्रभुता, मानवीय जिम्मेदारी, तनाव त्रिदेवों या मसीह के व्यक्तित्व के दो स्वभावों के रहस्य जितना महत्वपूर्ण रहस्य नहीं है। लेकिन यह उतना ही रहस्यमय है और बाइबल सिखाती है।

मैं रुक जाऊँगा। मैं लंबे समय तक दूसरे अंशों पर जा सकता हूँ। हाथ में हाथ डालकर, यह उन्हें एक साथ रखता है।

और इसलिए हमें दोनों की पुष्टि करने की आवश्यकता है। किसी भी मामले में, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु। केवल परमेश्वर को ही स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु कहा जा सकता है।

यूहन्ना 17 में, महान पुरोहितीय प्रार्थना में, यीशु कहते हैं, पवित्र पिता, धर्मी पिता, धर्मी पिता। ये दिव्य उपाधियाँ हैं। पवित्र पिता, उन्हें सुरक्षित रखें, जो लोग पिता ने आपके नाम पर पुत्र को दिए हैं, जिन्हें आपने मुझे दिया है ताकि वे एक हो सकें, जैसे हम एक हैं।

इस सुन्दर, सुन्दर प्रार्थना में वे पिता को स्वयं ईश्वर कहकर संबोधित करते हैं। पवित्र पिता। पवित्र पिता हैं, पवित्र पुत्र हैं और पवित्र आत्मा हैं।

सभी को ईश्वरीय उपाधियाँ। सभी प्रकार के आराम का परमेश्वर। 2 कुरिन्थियों 1 ईसाइयों और पादरियों का पसंदीदा है।

क्यों? क्योंकि यह बहुत ही सुन्दर शिक्षा देता है। 2 कुरिन्थियों 1:3, हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का पिता और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है, जो हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है, इसलिए इसका उद्देश्य यही है। परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को शान्ति देने का एक उद्देश्य यह है कि हम भी उन लोगों को शान्ति दे सकें जो किसी भी प्रकार के क्लेश में हों, उसी शान्ति के साथ जिससे परमेश्वर हमें शान्ति देता है।

परमेश्वर कितना अच्छा है। सभी सांत्वनाओं का परमेश्वर वही है जिसे पिता कहा जाता है। फिर से, यह हमारे रडार के अंतर्गत आता है क्योंकि हम मानते हैं कि परमेश्वर परमेश्वर है और वह है, लेकिन हम ऐसा नहीं करते। हमें सिर्फ अनुमान नहीं लगाना चाहिए।

हमें अपने विश्वास के हर पहलू को शास्त्रों से साबित करना चाहिए। यह समझने के लिए यहाँ कोई बड़ी मानसिक कसरत की ज़रूरत नहीं है कि सभी तरह के आराम का परमेश्वर जो अपने लोगों को आराम देता है और फिर दूसरों को भी वह आराम देना है, वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है जो इस संदर्भ में अपने लोगों के लिए प्यार और करुणा से भरा हुआ है। इफिसियों 1:17 फिर से, मैं यह कहने का साहस करूँगा कि अगर आप इस महान पैराग्राफ के बारे में सोचते हैं तो आपके दिमाग में क्या आता है, आप लोगों को इफिसियों 1:15 से लेकर अध्याय के अंत तक पढ़ने के लिए कह सकते हैं।

मुझे संदेह है कि कोई भी यह कहेगा कि इसमें परमेश्वर को महिमावान पिता और प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर कहा गया है, लेकिन ऐसा है। हम बस इसे अनदेखा कर देते हैं, और मुझे लगता है कि हम अभी जो कर रहे हैं, उसे करके हम परमेश्वर की महिमा बेहतर तरीके से कर सकते हैं। शायद यह हमारी सोच और हमारी प्रार्थनाओं में बेहतर जगह बनाएगा, और मुझे लगता है कि मैंने व्याख्यानों की इस श्रृंखला में यही कहा है।

व्यवस्थित धर्मशास्त्र का संबंध व्याख्या से है। यह दो तरह से काम करता है। पहला, अगर इसे रूढ़िवादी तरीके से सही तरीके से किया जाए तो यह व्याख्या पर आधारित होना चाहिए, है न? दूसरा, बाइबल की शिक्षाओं का अध्ययन व्याख्या को सूचित करता है क्योंकि यह हमें यह देखने में मदद करता है कि वास्तव में वहाँ क्या है जिसे हमने हल्के में लिया था।

मैं वर्षों से प्रायश्चित के सिद्धांत को पढ़ाते हुए जानता हूँ कि जब मैं क्राइस्टस विक्टर को पढ़ाता हूँ तो मैं जानता हूँ कि मसीह हमारा शक्तिशाली चैंपियन है जो हमारे दुश्मनों को हराता है और यह बात उत्पत्ति 3:15 से लेकर प्रकाशितवाक्य 5 तक बाइबल में हर जगह दिखाई देती है। मसीह एक चैंपियन है। मसीह विजेता है।

वह हमारे शत्रुओं को परास्त करता है। वह शैतान को परास्त करता है। वह राक्षसों का नाश करता है।

आप जानते हैं, हमें पहले दिन से पहले जज मत करो। यह सब। फिर मैंने छात्रों को इस तरह से व्यवहार करते देखा है।

वाह, यह एक अद्भुत बाइबिल विषय है। मैंने पहले भी ऐसी चीजें पढ़ी हैं, लेकिन मैंने इस पर कभी ध्यान नहीं दिया जैसा कि अब देता हूँ। बढ़िया! न केवल व्यवस्थित विज्ञान को व्याख्या पर आधारित होना चाहिए, बल्कि लोगों को बाइबल की शिक्षाओं को समझने में मदद करके व्याख्यात्मक समझ को प्रोत्साहित करना चाहिए, जो कि धर्मशास्त्र, ईसाई धर्मशास्त्र, के बारे में है।

इस कारण से, इफिसियों 1:15 में पौलुस कहता है, क्योंकि मैंने प्रभु यीशु मसीह यीशु में तुम्हारे विश्वास और सभी संतों के प्रति तुम्हारे प्रेम के बारे में सुना है, मैं तुम्हारे लिए धन्यवाद देना नहीं छोड़ता, अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें याद करता हूँ कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर, अर्थात् पिता है और वह उसे देहधारी पुत्र के पुत्र का परमेश्वर, महिमा का पिता कहता है। महिमा के इस जननात्मक शब्द का अनुवाद, निश्चित रूप से, महिमामय पिता किया जा सकता है। दिव्य उपाधियाँ अगर मैंने कभी देखी हैं।

प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर, महिमावान पिता। ओह, मेरा वचन। वह तुम्हें बुद्धि और प्रकाशन की आत्मा दे, ताकि वह तुम्हारे जीवन, तुम्हारी आँखें और तुम्हारे हृदय को प्रकाशित कर सके, जिसे तुम जान सको, और फिर वह तीन बातों को आश्चर्यजनक रूप से समझाता है।

हमारे पास जो आशा है, हमारे प्रति परमेश्वर की शक्ति की महानता और मैंने वास्तव में उन्हें क्रम से बाहर कर दिया। परमेश्वर का धन, वह आशा जिसके लिए उसने हमें बुलाया है। संतों में परमेश्वर की महिमामय विरासत का धन और परमेश्वर की महान शक्ति।

यही वह है जिसे वह वास्तव में विकसित करता है। हम विश्वासियों के प्रति परमेश्वर की महान शक्ति। हमारी आशा एक दृढ़ आशा है कि यीशु फिर से आएंगे और हमें वह अद्भुत विरासत मिलेगी जिसके बारे में पतरस अध्याय एक की आयत तीन से पांच में बात करता है।

संतों में परमेश्वर की महिमामय विरासत संत हैं। कहो, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं। भगवान को मूर्ख पुरस्कार मिलता है।

नहीं, वह ऐसा नहीं करता। इफिसियों 5 में, मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया, उसे पवित्र बनाने के लिए खुद को एक शक्ति दी, और कलीसिया को दुल्हन के रूप में अपने सामने प्रस्तुत किया, दोषरहित, बेदाग, सुंदर, जिसमें किसी भी तरह से कोई पाप या अपूर्णता नहीं थी। परमेश्वर अपने अनुग्रह से कलीसिया को उसके उग्रवादी चरण के बाद विजयी कलीसिया के रूप में प्रस्तुत करेगा और परमेश्वर अपने लोगों की महिमा में महिमावान होगा क्योंकि तब वह स्वर्गदूतों के सामने संतों में अपनी शानदार विरासत के धन को प्रकट करेगा।

वह अपने संतों को विरासत में पाता है। किसी भी मामले में, मैं इस अनुच्छेद की ओर बढ़ रहा हूँ, जो एक सुंदर अनुच्छेद है, लेकिन मुख्य विचार यह है: परमेश्वर पिता, देहधारी यीशु का महिमामय पिता और प्रभु है।

इफिसियों 4 में, पौलुस चर्च की एकता पर निर्णायक बाइबिल कथन देता है। आप इसे अच्छी तरह से जानते हैं। अपने पाठकों को एकता और शांति का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करने के बाद, वह कहता है कि एक शरीर और एक आत्मा है, ठीक वैसे ही जैसे आपको एक ही आशा के लिए बुलाया गया था जो आपके बुलावे से संबंधित है, एक प्रभु, एक विश्वास, एक बपतिस्मा, एक ईश्वर और सबका पिता जो सब पर, सबके माध्यम से और सब में है।

एक ईश्वर और सबका पिता पिता की ईश्वरीयता को दर्शाता है। मसीह का एक शरीर, चर्च, एक आत्मा, जाहिर है पवित्र आत्मा, अनंत जीवन की एक आशा, एक प्रभु, यीशु मसीह, उस पर एक विश्वास, एक बपतिस्मा। यह प्रेरितों की पुस्तक के पैटर्न का अनुसरण करता है कि ईसाई बपतिस्मा मसीह में विश्वास का पालन करता है।

यह शिशु बपतिस्मा को अस्वीकार नहीं कर रहा है। यह सिर्फ उसके बारे में बात नहीं कर रहा है। एक ईश्वर और सबका पिता जो सब पर, सबके माध्यम से और सब में है।

यह हमारी चिंता की अंतिम अभिव्यक्ति है। वह ईश्वर है। वह सर्वोच्च है।

वह समग्र है, सबके बीच है, और सब में है। पॉल इसे और अधिक जोरदार तरीके से कैसे कह सकता है? जेम्स 3.9, ओह हाँ, भाषण या मानवीय जीभ पर पैगाम मेटोनीमी द्वारा। जीभ का उपयोग उस चीज के लिए किया जाता है जो वह उत्पन्न करती है, भाषण, और जेम्स खुश नहीं है।

वह इस बारे में एक भी अच्छी बात नहीं कहता। अरे हाँ, वह करता है। वह इस बारे में एक अच्छी बात कहता है।

वह कहते हैं, इसके साथ हम अपने परमेश्वर और पिता की स्तुति करते हैं। हाँ, अगली पंक्ति में वह कहते हैं, लेकिन इसके साथ हम उनकी छवि में बने मनुष्यों को शाप देते हैं। वह कुछ अच्छा नहीं कह रहे हैं।

वह कह रहा है कि हमारी जीभें मनमौजी हैं। वे चंचल हैं। अब यह सच है कि वे हमारे प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं।

इसके साथ हम परमेश्वर को आशीर्वाद देते हैं। जाहिर है, आशीर्वाद के बाद के शब्द परमेश्वर का संदर्भ हैं। यहाँ उन्हें हमारा प्रभु और पिता कहा गया है।

ईश्वर ईश्वर है। यह एक सत्य है, मैं जानता हूँ, लेकिन हमें इसे पवित्र शास्त्र से दिखाना होगा। 1 पतरस 1:3, हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता धन्य हैं, जिन्होंने हमें मृतकों में से यीशु मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से एक जीवित आशा के लिए फिर से जन्म दिया है।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता। आप कहते हैं, एक मिनट रुकिए। क्या अनंत काल से पुत्र का कोई परमेश्वर है? नहीं, लेकिन देहधारी पुत्र का परमेश्वर है। वास्तव में, इब्रानियों अध्याय 1, एक दूसरे के बगल में छंदों में, कहता है कि पुत्र का परमेश्वर है और पुत्र परमेश्वर है।

देहधारी पुत्र की बात करें तो, इसलिए परमेश्वर, आपके परमेश्वर, इब्रानियों 1.9, ने आपको सभी सांसारिक राजाओं के ऊपर राजा के रूप में पवित्र आत्मा से अभिषिक्त किया है। पुत्र के बारे में, परमेश्वर कहते हैं, आपका सिंहासन, हे परमेश्वर, श्लोक 8। पिता पुत्र को परमेश्वर कहते हैं और पुत्र का एक परमेश्वर है। देहधारी पुत्र परमेश्वर है।

इस प्रकार, पिता उसे ईश्वर कहते हैं, और वह पिता के अधीन देहधारी पुत्र है। इस प्रकार, पिता उसका ईश्वर है। मैं अपना मामला यहीं समाप्त करता हूँ।

उनकी दिव्य उपाधियाँ पिता के ईश्वरत्व को दर्शाती हैं। मसीह के साथ उनका संबंध भी पिता के ईश्वरत्व को दर्शाता है। पवित्रशास्त्र पिता की ईश्वरत्व को दर्शाता है कि वह किस तरह से उन्हें और मसीह को एक दूसरे से जोड़ता है।

हम देहधारी मसीह के बारे में ठीक उसी तरह बात कर रहे हैं जैसा हमने अभी कहा। ईश्वर-मनुष्य के रूप में, उसका एक ईश्वर है। यीशु के बपतिस्मा के समय, पिता स्वर्ग से घोषणा करता है कि यीशु उसका पुत्र है, मत्ती 3। जब यीशु का बपतिस्मा हुआ, तो वह तुरंत पानी से ऊपर आया, और देखो, उसके लिए स्वर्ग खुल गया, और उसने परमेश्वर की आत्मा को कबूतर की तरह उतरते देखा।

यह एक थियोनोमी है, अदृश्य ईश्वर का एक दृश्य प्रकटन जो उस पर विश्राम करने के लिए आता है और दिखाता है कि आत्मा उसे कभी नहीं छोड़ेगी। ईश्वर-मनुष्य के रूप में आत्मा उसका स्थायी अधिकार है। और देखो, स्वर्ग से एक आवाज़ आई, यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ।

यीशु के बपतिस्मा के समय, पिता स्वर्ग से घोषणा करते हैं कि यीशु उनके पुत्र हैं। जैसा कि हमने मत्ती 11 में देखा, यीशु ने गलील के उन शहरों की निंदा की जिन्होंने उनके चमत्कार देखे और फिर भी विश्वास नहीं किया और उनके संदेशों को नहीं सुना, उन्होंने पिता को स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु कहा और कोई भी पुत्र को नहीं जानता सिवाय पिता के, कोई भी पिता को नहीं जानता सिवाय पुत्र के, और वे जिन्हें पुत्र प्रकट करना चाहता है। यह पिता और पुत्र के बीच पारस्परिक ज्ञान को संदर्भित करता है।

यह ईश्वर के अलावा किसी और के बारे में नहीं कहा जा सकता कि पिता के अलावा कोई भी पुत्र को नहीं जानता। निश्चित रूप से, लोग पुत्र को जानते हैं। ओह, लेकिन इस तरह से नहीं। वे नहीं जानते।

और यह ईश्वर के अलावा किसी और के बारे में नहीं कहा जा सकता कि कोई भी पिता को नहीं जानता सिवाय बेटे के और उन लोगों के जिन्हें बेटा उसे प्रकट करना चाहता है। वे दोनों ईश्वर को जानते हैं। बेटा पिता को जानता है, और वे लोग जिन्हें वह उसे प्रकट करना चाहता है पिता को जानते हैं।

लेकिन ये ज्ञान के दो अलग-अलग क्रम हैं। एक इसलिए क्योंकि पुत्र पिता को उनके प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में प्रकट करना चुनता है। दूसरा त्रित्ववादी व्यक्तियों का पारस्परिक, अंतर्निहित, दिव्य ज्ञान है, जो अवतार में जारी रहता है।

पिता पुत्र को संसार में भेजता है। जॉन बार-बार यही कहता है। मैं सिर्फ एक पाठ पढ़ूंगा, जॉन 3:17.

बाइबल की सबसे मशहूर आयत, यूहन्ना 3, 16 के बाद। क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने हमें भेजा, अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत की निंदा करे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

यीशु उद्धार के मिशन पर आए थे। क्या वह न्याय नहीं लाते? हाँ, वह न्याय लाते हैं। लेकिन यह उनके मिशन का प्राथमिक उद्देश्य नहीं है।

वह एक मिशनरी है। मिशनरी लोगों से प्रेम करने, सुसमाचार बाँटने और, प्रभु की इच्छा से, लोगों को मसीह की ओर ले जाने के लिए किसी स्थान पर जाते हैं। वे न्याय करने नहीं जाते, लेकिन क्या वे ऐसा करते हैं? हाँ, वे उन लोगों को लाते हैं जो सुसमाचार सुनते हैं और उसे अस्वीकार करते हैं, जिनका न्याय उन लोगों की तुलना में अधिक होगा जिन्होंने कभी नहीं सुना।

मिशनरी के बचाने के इरादे का एक उपोत्पाद न्याय है। यह परमेश्वर के पुत्र, पिता, क्षमा करें, और पुत्र और आत्मा के लिए समान है। परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में इसलिए नहीं भेजा कि वह संसार को दोषी ठहराए, बल्कि इसलिए कि संसार उसके द्वारा बचाया जाए।

क्या पुत्र संसार, अविश्वासियों की निंदा करेगा? हाँ। न्याय के अंश पिता और पुत्र के बीच समान रूप से विभाजित हैं, जो न्यायाधीश हैं। आत्मा कभी नहीं, लेकिन त्रित्ववादी धर्मशास्त्र के एक परिणाम के रूप में, मैं इसे इस तरह कहूँगा।

अंतिम दिन का न्यायाधीश कौन है? न्यायाधीश पवित्र त्रिमूर्ति है क्योंकि परमेश्वर अविभाज्य है, और अपने कार्यों में, वह अविभाज्य है। पवित्रशास्त्र विशेष रूप से कहता है कि पिता और पुत्र उस भूमिका में भाग लेंगे। मैं कहूँगा कि यह कभी नहीं कहता कि आत्मा ऐसा करती है।

मैं इसे बाइबिल के तथ्यों के रूप में स्वीकार करता हूँ और फिर निष्कर्ष निकालता हूँ, फिर भी, चूँकि परमेश्वर एक में तीन हैं और अविभाज्य हैं और उनके सभी बाहरी संचालन तीनों व्यक्तियों द्वारा साझा किए जाते हैं, यह पवित्र त्रिमूर्ति का कार्य है। पिता यीशु को दुनिया में भेजता है। आप इनमें से कुछ चीजों के द्वारा पिता के ईश्वरत्व को प्रदर्शित कर सकते हैं, यह दिखाते हुए कि संबंध पारस्परिक नहीं है।

यह कहना कोई मतलब नहीं रखता कि बेटे ने पिता को दुनिया में भेजा। गलत। गलत।

नहीं, नहीं, एक आदेश है।

वे समान हैं। वे शाश्वत हैं। वे महिमा और शक्ति में समान हैं, और उनकी पूजा हमेशा की जानी चाहिए, और की जाएगी।

लेकिन बेटे ने पिता को दुनिया में नहीं भेजा। आत्मा ने नहीं भेजा। पिता ने बेटे को भेजा, और बाद में, पिता और बेटे ने आत्मा को दुनिया में भेजा।

पिता का मसीह के साथ सम्बन्ध ही पिता के सच्चे ईश्वरत्व को दर्शाता है। पिता पुत्र को अधिकार देता है। आप इस कथन को उलट नहीं सकते।

कभी नहीं। और बेटे ने पिता को क्षमा करने का अधिकार दिया है। नहीं।

नहीं, यह काम नहीं करेगा।

17:2. जब यीशु ने ये शब्द कहे, यूहन्ना 17, तो उसने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाई और कहा, पिता, वह समय आ गया है। अपने बेटे की महिमा करो ताकि बेटा तुम्हारी महिमा करे, क्योंकि तुमने उसे सभी प्राणियों पर अधिकार दिया है। पिता द्वारा बेटे को अधिकार दिए जाने का यह एक और उदाहरण है।

या यह प्राथमिक पहला प्रदर्शन है, जिसके बारे में मुझे बात करनी चाहिए। धन्यवाद। पिता ने पुत्र को सभी प्राणियों पर अधिकार क्यों दिया? देहधारी पुत्र को।

उन सभी को अनन्त जीवन देने के लिए जिन्हें आपने उसे दिया है। पिता द्वारा लोगों को पुत्र को देने की धारणा जॉन के चुनाव के तीन विषयों में से एक है, और यह जॉन 17 में महान प्रार्थना में चार बार आता है। यह इस प्रार्थना में परमेश्वर के लोगों के उद्धार को निर्धारित करता है।

उनके लिए, पुत्र पिता को प्रकट करता है, अनन्त जीवन देता है, उन्हें सुरक्षित रखता है, और उनके लिए प्रार्थना करता है। मैं दुनिया के लिए प्रार्थना नहीं करता, मैं उन लोगों के लिए प्रार्थना करता हूँ जिन्हें आपने मुझे दिया है और इसी तरह। और 26 में सार है, मुझे खेद है, 24।

हे पिता, मैं यह भी चाहता हूँ कि जिन्हें तूने मुझे दिया है वे भी मेरे साथ हों, जहाँ मैं अपनी महिमा को देखूँ जो तूने मुझे दी है, क्योंकि तूने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझसे प्रेम किया। पिता पुत्र को अधिकार देता है।

इसके अलावा, हम प्रकाशितवाक्य 2:27 की ओर नहीं मुड़ेंगे। पिता पुत्र को शब्द देता है। यूहन्ना द्वारा दिए गए पुत्र के मुख्य चित्रों में से एक, जीवनदाता होने के साथ-साथ, जो लोगों को अनन्त जीवन प्रदान करता है, अदृश्य पिता को प्रकट करने वाला है।

इसलिए यूहन्ना 12 में यीशु कह सकते थे, यूहन्ना 12:49 और 50, यीशु, मैंने अपनी इच्छा से नहीं कहा, अर्थात् परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध, परन्तु पिता जिसने मुझे भेजा है, उसने मुझे आज्ञा दी है, कि क्या कहूँ और क्या बोलूँ। और मैं जानता हूँ कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है। इसलिए मैं जो कहता हूँ, वही पिता ने मुझसे कहा है।

यह कथन उलटा नहीं जा सकता। पिता वैसा नहीं बोलता जैसा बेटा उसे बताता है। नहीं, यह काम नहीं करता।

क्या हम शाश्वत अंतर-त्रित्ववादी संबंधों के बारे में बात कर रहे हैं? हम नहीं कर रहे हैं। हम अर्थव्यवस्था के बारे में बात कर रहे हैं। हम अवतार के बारे में बात कर रहे हैं।

पिता ने पुत्र को यह बताया कि उसे क्या कहना है। और पुत्र ही पिता को प्रकट करने वाला है। जॉन के सुसमाचार के लगभग हर पृष्ठ पर।

पिता पुत्र को काम करने के लिए देता है। हम इसे अगले पद में देखते हैं जहाँ हम यूहन्ना 17 में रुके थे, या दो पद। यूहन्ना 17 3, यह अनन्त जीवन है, कि वे तुम्हें जानें, जो यीशु मसीह में एकमात्र सच्चा परमेश्वर है जिसे तुमने भेजा है।

हे पिता, मैंने धरती पर आपकी महिमा की है, इस अर्थ में कि मैंने वह कार्य पूरा किया है जो आपने मुझे करने के लिए दिया था। पुत्र और आत्मा पिता को कार्य करने के लिए नहीं देते। पिता पुत्र को कार्य करने के लिए देते हैं।

और हम कह सकते हैं कि वे दोनों आत्मा को कार्य करने के लिए देते हैं, हालाँकि यह अभी हमारा विषय नहीं है। यीशु अपने आप कुछ नहीं करता, यूहन्ना 5 30. वह केवल वही करता है जो पिता उससे करवाना चाहता है।

वह पिता की आज्ञा का पालन करता है, यूहन्ना 6:38, 8 24, 14 31. यह आखिरी बात वाकई अच्छी है। इस दुनिया का शासक, यूहन्ना 14 30, आ रहा है।

वह मुझे मारने आ रहा है। उसका मुझ पर कोई अधिकार नहीं है। मुझमें ऐसा कोई पाप नहीं है जो उसे आकर्षित करे और वह किसी तरह से इस दुनिया का शासक होने का दावा कर सके।

लेकिन मैं वही करता हूँ जो पिता ने मुझे आज्ञा दी है, ताकि दुनिया जान ले कि मैं पिता से प्रेम करता हूँ। उठो, चलो यहाँ से चलते हैं। यीशु क्रूस पर मृत्यु तक पिता की आज्ञा का पालन करते हैं।

और वह पिता से प्रार्थना करता है, यूहन्ना 14 16 और 17. मैं पिता से विनती करूँगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा, अर्थात् सत्य की आत्मा और इत्यादि। पिता के पास दिव्य उपाधियाँ हैं।

पिता का मसीह से सम्बन्ध जटिल है, लेकिन यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि पिता ईश्वर है। यह पुत्र के ईश्वरत्व को अस्वीकार नहीं करता। यह कभी-कभी पुत्र के देहधारण में उसकी मानवता को रेखांकित करता है।

पिता के पास स्वयं में दिव्य गुण हैं। इनमें आत्म-अस्तित्व भी शामिल है, यूहन्ना 5 26। पिता के पास स्वयं में जीवन है।

वह अकारण है। छोटे बच्चे का सवाल, माँ, भगवान को किसने बनाया? भगवान को किसी ने नहीं बनाया, प्रिये, प्रिये। भगवान हमेशा से ही हैं।

माँ, यह समझना मुश्किल है। मानव जाति में आपका स्वागत है, मेरे प्यारे। ओह, मेरे शब्द।

पिता स्वयं में जीवन रखता है। किसी ने उसे पैदा नहीं किया। वह अकारण है।

मैं इसे इस तरह कहना पसंद करता हूँ। वह जीवित परमेश्वर है। अनंत समझ, भजन 147 5. उसकी समझ अनंत है।

सर्वव्यापकता, यिर्मयाह 23:23-24. क्या मैं केवल निकट रहने वाला परमेश्वर हूँ? क्या मैं दूर रहने वाला परमेश्वर भी नहीं हूँ? इसका उत्तर है, हाँ, हाँ। वह निकट ही है।

वह निकट है। वह निकट है। ओह, वह बहुत दूर है।

वह पारलौकिक है। आप इसे कैसे समझा सकते हैं? मैं इसे नहीं समझा सकता। इसे ही ईश्वर कहते हैं।

और पिता में वे गुण हैं जो परमेश्वर में हैं। कुछ ऐसे गुण हैं जो केवल परमेश्वर में ही हैं। शास्त्र उन गुणों को परमेश्वर, पिता को बताता है।

इसलिए, पिता परमेश्वर है। सर्वज्ञ, यशायाह 40:28. यशायाह 40 अद्भुत है।

भगवान की उत्कृष्टता के बारे में बात करें। भगवान की नज़र में, मनुष्य टिड्डे हैं। ओह!

अद्भुत। यशायाह 40:28। क्या तुमने नहीं सुना? क्या तुमने नहीं जाना? क्या तुमने नहीं सुना? प्रभु सनातन परमेश्वर है, पृथ्वी के छोर का सृष्टिकर्ता।

वह मनुष्यों की तरह न तो थकता है और न ही थकता है। उसकी समझ अथाह है। वह सब कुछ जानता है।

वह शाश्वत है। भजन 90 बहुत सुंदर है। अनंत काल से अनंत काल तक, आप परमेश्वर हैं।

हाँ, लेकिन संदर्भ पर ध्यान दें। हे प्रभु, पहाड़ों के बनने से पहले या जब से आपने दुनिया, धरती और संसार का निर्माण किया था, तब से आप सभी पीढ़ियों में हमारे निवास स्थान रहे हैं। अनंत काल से अनंत काल तक, आप ईश्वर हैं।

यह सनातन परमेश्वर इस्राएल का निवास स्थान है। हल्लिलूय्याह। सनातन से सनातन तक, परमेश्वर एक परमेश्वर है।

धार्मिकता। यूहन्ना 17:25. हे धार्मिक पिता, यीशु ने उस महान याजकीय प्रार्थना में प्रार्थना की।

संप्रभुता। मत्ती 11:25. हम पहले ही वहाँ पहुँच चुके हैं।

पिता, भगवान, स्वर्ग और पृथ्वी के भगवान। वह अपने पिता से प्रार्थना करता है। ज्ञान।

हम पहले ही कह चुके हैं कि उसके पास असीम समझ है, और वह सब कुछ जानता है। यीशु ने कहा, उन मूर्तिपूजकों की तरह मत बनो जो बार-बार प्रार्थना दोहराते हैं, यह सोचकर कि उनके बहुत से शब्दों के कारण उनकी सुनी जाएगी। मत्ती 6 8. पहाड़ी उपदेश।

उनके जैसे मत बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है कि तुम्हें क्या चाहिए। हम क्यों प्रार्थना करते हैं कि वह चाहता है कि हम उससे माँगें? वह जानता है कि तुम्हें क्या चाहिए इससे पहले कि तुम उससे माँगो। वह परमेश्वर है।

वह उदार है। मत्ती 5:45. वह अपनी धूप और वर्षा बनाता है।

इस मामले में वह एक अविवेकी, उदार ईश्वर है। उसकी अच्छाई वास्तव में उसके सभी प्राणियों के प्रति है। वह जानवरों के प्रति भी अच्छा है।

ये सारी बातें ईश्वर को समर्पित हैं। सामान्य ईश्वर, जिसे हम ईश्वर पिता के नाम से जानते हैं। उसकी दया।

लूका 6:36. यीशु ने कहा, दयालु बनो, जैसा तुम्हारा पिता दयालु है। एक निर्दयी मसीही एक विरोधाभास है, शब्दों में विरोधाभास है।

सुनो दोस्तों, हम दया दिखाने में माहिर हैं क्योंकि हमने खुद दया के झरने से भरपूर पानी पिया है। बेशक, हम दूसरों पर दया दिखा सकते हैं। क्या डांटने का समय नहीं है? बेशक, समय है।

क्या इसे सुधारने का समय नहीं है? बेशक है। क्या न्याय करने का समय नहीं है? हाँ। न्याय के बारे में बाइबल की शिक्षा बहुत जटिल है।

इसमें कहा गया है कि आधा दर्जन बार न्याय न करें। इसमें कहा गया है कि आधा दर्जन बार न्याय करें। हमें इस पर सावधान रहना होगा।

लेकिन हम दया पाने में माहिर हैं। हमें दूसरों पर दया करने में भी माहिर होना चाहिए। जब लोग आपके बारे में सोचते हैं, तो क्या वे कहते हैं कि वह एक दयालु महिला है? दया उसके रोम-रोम से निकलती है।

यह जानने का एक अद्भुत तरीका होगा, है न? परमेश्वर ऐसा ही है। वह हमारे विपरीत, जो चंचल हैं, वफ़ादार है। उसके साथ, कोई बदलाव या बदलाव की छाया नहीं है, याकूब 1:17। जैसे उसके स्वर्गीय मंडल में, हमारे ऊपर रोशनी है, वैसे ही परमेश्वर के साथ कोई बदलाव नहीं है।

वह स्थिर है। वह विश्वसनीय है। हमारा पिता विश्वासयोग्य है।

प्रेम, क्योंकि परमेश्वर ने जगत से इतना प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, यूहन्ना 3:16। ईश्वरीय गुण प्रचुर मात्रा में हैं, और कभी-कभी उन्हें पुत्र या आत्मा के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। लेकिन बहुतायत से, बहुतायत से, उन्हें पिता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। इतना कि हम उन्हें नोटिस भी नहीं करते।

तो अभी, हम जानबूझकर उस बात पर ध्यान दे रहे हैं जिसे हम अक्सर नज़रअंदाज़ कर देते हैं। आराधना। पिता को वह आराधना मिलती है जो सिर्फ परमेश्वर को ही मिलती है।

उसके लोग उसकी स्तुति करते हैं, याकूब 3:9। अपनी जीभ से हम अपने परमेश्वर और पिता को धन्य कहते हैं। फिर से, यह संदर्भ में अच्छी बात नहीं है क्योंकि हम अपनी उसी जीभ से उसकी छवि में बनाए गए मनुष्यों को शाप देते हैं और इस तरह शाप देते हैं। लेकिन फिर भी, यह अपने आप में एक अच्छी बात है।

अपनी जीभों से हम अपने परमेश्वर और पिता की स्तुति करते हैं। फिलिप्पियों 4:20. परमेश्वर के लोग उसकी महिमा करते हैं। और मेरा परमेश्वर मसीह यीशु में अपनी महिमा सहित धन के अनुसार तुम्हारी हर एक ज़रूरत को पूरा करेगा।

फिलिप्पियों 4.19. हमारे परमेश्वर और पिता की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन। यह परमेश्वर को महिमा प्रदान करने वाला एक स्तुतिगान है।

धन्यवाद, इफिसियों 5.20. हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से हर बात के लिए परमेश्वर पिता को हमेशा धन्यवाद देते रहें। कितना सुंदर है। परमेश्वर आराधना के योग्य है।

वह आराधना जो केवल परमेश्वर की है। वह धार्मिक भक्ति का विषय है, याकूब 1:27। हम शायद उस कथन को उस तरह समाप्त नहीं करते जिस तरह याकूब ने किया। हमारे पिता परमेश्वर की दृष्टि में शुद्ध और निष्कलंक धर्म यही है।

लोगों को उपदेश देना और मरे हुएों को जिलाना। नहीं, खुद को दुनिया से अछूता रखना और अनाथों और विधवाओं से उनके संकट में मिलना। क्या तुम मजाक कर रहे हो? नहीं, मैं मजाक कर रहा हूँ।

बेशक, इसका संबंध जेम्स की पुस्तक के ऐतिहासिक संदर्भ से है। संदर्भ का मतलब सिर्फ साहित्यिक संदर्भ, पृष्ठ पर लिखे शब्द नहीं है, इसका मतलब भाषण की घटना है। इसका मतलब ऐतिहासिक संदर्भ है।

और कुछ गरीब लोग थे, वास्तव में गरीब लोग। कुछ ऐसे भी थे जो इतने गरीब नहीं थे, लेकिन कुछ वाकई बहुत गरीब लोग थे जिनके बारे में जेम्स चिंतित था। दोनों नियमों में विधवाओं और अनाथों को अक्सर उपेक्षित किया जाता है और उनका फायदा उठाया जाता है।

और परमेश्वर के पास उनके लिए एक हृदय और चिंता है। और वह चाहता है कि उसके लोग भी ऐसा ही करें। और जब वे ऐसा करते हैं, तो वे शुद्ध और निष्कलंक धर्म में भाग ले रहे होते हैं।

सावधान रहें। जेम्स धर्म की निंदा करता है, जिसे धर्म के रूप में वर्णित किया जाता है, और वह अपनी पुस्तक के उसी अध्याय में इसकी प्रशंसा करता है। बपतिस्मा पुत्र और आत्मा के नाम पर किया जाता है, है न? हाँ, लेकिन यह पिता और पुत्र और आत्मा के नाम पर है। यह एक जबरदस्त त्रित्ववादी श्लोक है क्योंकि यीशु कहते हैं, जैसा कि मैथ्यू ने दर्ज किया है, उन्हें नाम में बपतिस्मा देना, यह एकवचन है, पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा का।

यह बहुत सुंदर है। विश्वासी उसके लिए जीते हैं। 1 कुरिन्थियों 8:6 एक बहुत ही महत्वपूर्ण अनुच्छेद है, और मैंने पिछले कुछ वर्षों में ही मसीह के ईश्वरत्व के लिए इसे खोजा है।

हालाँकि स्वर्ग या पृथ्वी पर तथाकथित देवता हो सकते हैं, जैसा कि वास्तव में कई देवता हैं, छोटे जी, कई प्रभु, छोटे एल। फिर भी हमारे लिए, एक ईश्वर है, पिता, जिनसे सभी चीजें हैं और जिनके

लिए हम अस्तित्व में हैं। और एक प्रभु, यीशु मसीह, जिसके द्वारा सभी चीजें हैं और जिसके द्वारा हम अस्तित्व में हैं। यीशु को पिता के साथ-साथ ईश्वर के रूप में पहचाना जाता है।

और यही हमारी चिंता का विषय है, पिता का देवता। और इसलिए हम बताते हैं, हमारे लिए, एक ईश्वर और पिता है। हमारे पास कई देवता और कई स्वामी नहीं हैं, ऐसा हमारा मानना है।

जिससे सभी चीजें हैं, वही सृष्टिकर्ता है। और जिसके लिए हम जीते हैं। हम केवल मनुष्यों या यहाँ तक कि अपने लिए या स्वर्गदूतों के लिए नहीं जीते हैं।

हम परमेश्वर के लिए जीते हैं। और उस संदर्भ में वह पिता है। हमारे पास संगति है, 1 यूहन्ना 1:3। यूहन्ना का एक लक्ष्य यह है कि आप हमारे साथ संगति करें और हमारी संगति पिता और उसके पुत्र, यीशु मसीह के साथ है।

यूहन्ना ने हमेशा पवित्र आत्मा का जिक्र नहीं किया है। यह एक अलग कहानी है। 1 यूहन्ना में उसने आत्मा का जिक्र किया है, जो कि अच्छा है।

वैसे भी, वहाँ हमारी संगति पिता और उसके पुत्र के साथ है। प्रथम यूहन्ना में संगति उद्धार, साझा उद्धार के बारे में बात करने का एक और तरीका है। यह मनुष्यों के बीच साझा किया जाता है, लेकिन यह सबसे पहले पवित्र त्रिमूर्ति से आता है और इसमें शामिल होता है, जिनमें से दो व्यक्ति यूहन्ना अलग करता है।

और बेशक, वह पहले व्यक्ति, पिता से शुरू करता है। और हम उससे प्रार्थना करते हैं क्योंकि वह परमेश्वर है। इफिसियों 3:14 से 17।

मैं इन अंशों को दोहराने की कोशिश नहीं करता, लेकिन हमने अभी तक इस पर ध्यान नहीं दिया है। इफिसियों 3, श्लोक 14 से शुरू होता है। इस कारण से, मैं पिता के सामने अपने घुटनों को झुकाता हूँ।

निश्चय ही पवित्र शास्त्र में प्रार्थना के कई अलग-अलग तरीके दिए गए हैं। मैं इसके बारे में और कुछ नहीं कहूँगा। उसी से स्वर्ग और पृथ्वी पर हर एक घराने का नाम रखा जाता है, कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवन्त होते जाओ। और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदयों में बसे, और तुम प्रेम में जड़ पकड़ कर और नेव डाल कर सब पवित्र लोगों के साथ भली-भाँति समझने की शक्ति पाओ, कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई, और गहराई कितनी है, और मसीह के प्रेम को जान सको।

यही आपके ज्ञान का मार्ग है, ताकि आप परमेश्वर की संपूर्णता से भर जाएँ। मैं पिता के सामने अपने घुटने टेकता हूँ। कैपिटल एफ इस जगह पर उस शब्द की सही व्याख्या है।

क्योंकि परमेश्वर पिता ही है... प्रार्थना परमेश्वर पिता को संबोधित है क्योंकि वह परमेश्वर है। पिता परमेश्वर है। उसके पास ऐसी उपाधियाँ हैं जो परमेश्वर को ही दी जा सकती हैं।

मसीह के अवतार, पुत्र के अवतार, यहां तक कि मसीह के साथ उसका संबंध यह दर्शाता है कि पिता ईश्वर है। पिता को दिव्य गुण दिए गए हैं। उसे पूजा मिलती है, और अंत में, पिता ऐसे कार्य करता है जो केवल ईश्वर ही करता है।

मुझे खेद है अगर मैं आपको यह कहकर थका रहा हूँ, लेकिन यह एक तर्क है। कुछ ऐसे काम हैं जो केवल भगवान ही करते हैं। पिता उन कामों को करता है। इसलिए, पिता भगवान है।

यह निष्कर्ष निकालना अपरिहार्य है। यह एक अनूठा निष्कर्ष है, यही वह शब्द है जो मैं कहना चाहता था, एक अनूठा निष्कर्ष। पिता परमेश्वर की भूमिका निभाता है और परमेश्वर के कार्य करता है।

वह सबका सृष्टिकर्ता है, 1 कुरिन्थियों 8, 6. सब कुछ उसी से है। वह अपने बेटे को खोए हुए लोगों का उद्धारकर्ता होने के लिए भेजता है, 1 यूहन्ना 4, 18. पिता ने बेटे को दुनिया का उद्धारकर्ता होने के लिए भेजा।

यह दुनिया इतनी बुरी है; फिर भी परमेश्वर इसे प्यार करता है। क्या हम खुश नहीं हैं? परमेश्वर उद्धार लागू करने के लिए पवित्र आत्मा भेजता है, यूहन्ना 14:26। मैं तुम्हें सत्य की आत्मा भेजने जा रहा हूँ, यीशु ने कहा।

मैं जा रहा हूँ। मैं तुम्हें अकेला नहीं छोड़ूंगा। मैं आत्मा को भेजने जा रहा हूँ।

पिता देता है, क्षमा करें, और पिता आत्मा भेजता है। केवल यीशु ही नहीं, यूहन्ना 14:26। मैं पिता से माँगने जा रहा हूँ, और वह तुम्हें आत्मा भेजेगा।

बेहतर होगा कि मैं बाइबल न बनाऊँ। यह अच्छा विचार नहीं है। लेकिन सहायक, पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सिखाएगा और इसी तरह की बातें भी।

पिता विश्वासियों को नया जन्म देता है, 1 पतरस 1:3। हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता धन्य हैं, जिन्होंने हमें यीशु मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से एक जीवित आशा के लिए फिर से जन्म दिया है। मृतकों में से। पुनर्जन्म में त्रिदेव शामिल हैं।

खास तौर पर, पिता इसकी इच्छा रखता है। वह इसकी योजना बनाता है। पिता अनुग्रह और शांति देता है, रोमियों 1:7. 2 यूहन्ना 3. पिता अपने बच्चों को आज्ञाकारिता का आदेश देता है, 2 यूहन्ना 4. ये परमेश्वर के कार्य हैं।

ये भूमिकाएँ केवल परमेश्वर ही निभाता है। परमेश्वर हमें हमारे सभी कष्टों में सांत्वना देता है, जैसा कि हमने देखा, 2 कुरिन्थियों 1:3। सब प्रकार की सांत्वना का पिता, ताकि हम दूसरों को उस सांत्वना से सांत्वना दे सकें जो उसने हमें दी है। पिता मरे हुए लोगों को जिलाएगा, यूहन्ना 5:21।

पवित्रशास्त्र में तीनों व्यक्तियों के बारे में यही कहा गया है। मुख्य रूप से पिता के बारे में, जिसमें ईश्वरीय निष्क्रियता भी शामिल है। कभी-कभी, पुत्र के बारे में भी यही कहा गया है।

रोमियों 8 में, कम से कम एक बार, पवित्र आत्मा इस कार्य में शामिल होता है। पिता निष्पक्ष रूप से न्याय करता है। यदि आप पिता को पुकारते हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति के कार्य के अनुसार निष्पक्ष रूप से न्याय करता है, तो पृथ्वी पर अपने जीवन को भय में जिँ, पीटर कहते हैं।

1 पतरस 1:17. लूथर ने कहा, यह भय परमेश्वर के प्रति प्रेम से मिश्रित भय है, जिसने पहले हमसे प्रेम किया। जॉन मैरी के शब्दों में, यह आतंक का भय नहीं है, बल्कि सम्मान का भय है।

जैसे लोग अपने माता-पिता का आदर करते थे और उनसे डरते थे। बाइबल में बहुत सारी सामग्री है; मैं इन शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त करता हूँ और यह स्पष्ट है। पिता परमेश्वर है।

हमारे अगले व्याख्यान में, हम प्रदर्शित करेंगे, प्रभु की इच्छा से, कि पुत्र भी ईश्वर है।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन और धर्मशास्त्र उचित या ईश्वर पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 6 है, पिता ईश्वर है।